+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

TODAY'S ANALYSIS
(आज का विश्लेषण)
(22 February 2025)

Sources:

The Hindu, The Indian Express, The Economics Times & PIB

Important News:

- भारत और चीन G20 को बचाने के लिए कड़ी मेहनत करने पर सहमत
- अमेरिकी FBI के नए निदेशक काश पटेल कौन हैं?
- ग्लेशियरों के पिघलने से समुद्र का स्तर इस शताब्दी में लगभग 2 सेमी बढ़ जायेगा

भारत और चीन G20 को बचाने के लिए कड़ी मेहनत करने पर सहमत:

चर्चा में क्यों है?

- विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने 21 फरवरी, 2025 को दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में G20 विदेश मंत्रियों की बैठक के दौरान चीनी विदेश मंत्री वांग यी के साथ बातचीत के दौरान कहा कि भारत और चीन ने G20 संगठन को "संरक्षित करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं"।
- इस बैठक में जहां विदेश मंत्री ने वास्तविक नियंत्रण रेखा की स्थिति सहित द्विपक्षीय विकास पर चर्चा की, दोनों देश "G20, SCO और ब्रिक्स के सदस्य" हैं, और उन्होंने "क्षेत्रीय और वैश्विक" मुद्दों पर भी चर्चा की है।
- विदेश मंत्री जयशंकर ने चीनी विदेश मंत्री वांग से कहा, हमें यह पहचानना चाहिए कि एक ध्रुवीकृत वैश्विक स्थिति में, हमारे दोनों देशों ने एक संस्था के रूप में G20 को संरक्षित और सुरक्षित रखने के लिए कड़ी मेहनत की है।

G20 जैसे बहुपक्षीय संगठनों के समक्ष क्या चुनौतियां हैं?

- उल्लेखनीय है कि विदेश मंत्री जयशंकर द्वारा बहुपक्षीय संगठनों का संदर्भ भी स्पष्ट है, क्योंकि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने हाल ही में उभरती अर्थव्यवस्थाओं के समूह ब्रिक्स पर हमला करते हुए कहा था कि यह "मृत" है, साथ ही अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने दक्षिण अफ्रीका में G20 बैठक का बहिष्कार किया है।
- उल्लेखनीय है कि दक्षिण अफ्रीका इस वर्ष के अंत में G20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी कर रहा है, ब्राजील ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेगा, जिन दोनों सम्मेलनों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भाग लेने की उम्मीद है।
- विदेश मंत्री जयशंकर ने G20 का जिक्र करते हुए कहा, "G20 सदस्यों के रूप में, हमें यह भी पहचानना चाहिए कि बहुपक्षवाद स्वयं बहुत क्षतिग्रस्त है"। "ऐसे में इस वैश्विक घाटे को कम करने के लिए अधिक 'बहुपक्षवाद' की आवश्यकता है, और वैश्विक एजेंडा को कुछ लोगों के हितों तक सीमित नहीं किया जा सकता"।
- उल्लेखनीय है कि अगले साल के G20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी अमेरिका द्वारा की जानी है और अमेरिकी नेतृत्व की हालिया टिप्पणियों ने इस संगठन के भविष्य पर संदेह पैदा कर दिया है।

एक प्रमुख बहुपक्षीय संगठन के रूप में G20:

- G20 विकासशील और विकसित देशों का एक अंतरराष्ट्रीय मंच है। G20 ने शुरू में व्यापक रूप से व्यापक आर्थिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया, लेकिन बाद में इसने अपने एजेंडे का विस्तार करते हुए अन्य बातों के साथ-साथ व्यापार, सतत विकास, स्वास्थ्य, कृषि, ऊर्जा, पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन और भ्रष्टाचार विरोधी शामिल हैं।

G20 की स्थापना:

- G20 की स्थापना 1999 में एशियाई वित्तीय संकट के बाद वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक गवर्नरों के लिए वैश्विक आर्थिक और वित्तीय मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक मंच के रूप में की गई थी।

G20 का शिखर सम्मेलन स्तर पर उन्नयन:

- 2007 के वैश्विक आर्थिक और वित्तीय संकट के मद्देनजर G20 को राज्य/सरकार के प्रमुखों के स्तर पर अपग्रेड किया गया था, और 2009 में, इसे "अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग के लिए प्रमुख मंच" नामित किया गया था।

G20 की सदस्यता एवं प्रोफाइल:

- अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका,

तुर्की, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका और दो क्षेत्रीय निकाय, अर्थात यूरोपीय संघ और अफ्रीकी संघ।

- G20 के सदस्य वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 85%, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का 75% से अधिक और दुनिया की लगभग दो-तिहाई आबादी का प्रतिनिधित्व करती हैं।

G20 कैसे काम करता है?

- उल्लेखनीय है कि G20 का कोई स्थायी सचिवालय या कर्मचारी नहीं है। इसके बजाय, G20 की अध्यक्षता हर साल सदस्यों के बीच घूमती रहती है। निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए, अध्यक्षता को वर्तमान, तत्काल पूर्व और अगले मेजबान देशों से बनी एक "ट्रोइका" द्वारा समर्थन दिया जाता है।

अमेरिकी FBI के नए निदेशक काश पटेल कौन हैं?

चर्चा में क्यों है?

- राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के कट्टर सहयोगी काश पटेल को 20 फरवरी को अमेरिकी सीनेट द्वारा संघीय जांच ब्यूरो (FBI) का नेतृत्व करने के लिए पुष्टि की गई थी।
- उन्हें 51 से 49 के वोट से पुष्टि की गई थी। केवल दो रिपब्लिकन ने FBI का नेतृत्व करने के लिए उनकी योग्यता पर चिंताओं का हवाला देते हुए पटेल के खिलाफ डेमोक्रेट्स के साथ शामिल हो गए और दावा किया कि वह राष्ट्रपति ट्रंप के आलोचकों के खिलाफ प्रतिशोध लेंगे।

FBI के निदेशक के रूप में भगवत गीता पर ली शपथ:

- भारतीय मूल के कश्यप 'काश' प्रमोद पटेल, जो ट्रम्प 2.0 में संघीय जांच ब्यूरो (FBI) के नए निदेशक हैं, ने भगवद गीता की शपथ ली।
- अमेरिकी सीनेट द्वारा FBI प्रमुख के रूप में चुने जाने के बाद, पटेल ने वाशिंगटन डीसी में FBI के नौवें निदेशक के रूप में शपथ ली। इस समारोह में उनके परिवार, उनकी प्रेमिका और सहकर्मी मौजूद थे।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

कौन हैं काश पटेल?

- कश्यप प्रमोद पटेल या काश पटेल का जन्म न्यूयॉर्क के लॉन्ग आइलैंड में गुजराती-भारतीय माता-पिता के घर हुआ था। उनका पालन-पोषण एक हिंदू के रूप में हुआ और उन्होंने भारत के साथ "बहुत गहरा संबंध" बताया है।
- उन्होंने रिचमंड यूनिवर्सिटी से क्रिमिनल जस्टिस में स्नातक की डिग्री और पेस यूनिवर्सिटी से कानून की डिग्री हासिल की और यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन से अंतरराष्ट्रीय कानून का प्रमाण पत्र प्राप्त किया। उन्होंने 2005 से 2013 के बीच फ्लोरिडा में काउंटी और संघीय पब्लिक डिफेंडर के रूप में काम किया। 2014 में, वह एक ट्रायल अटॉर्नी के रूप में न्याय विभाग में शामिल हुए और साथ ही संयुक्त विशेष अभियान कमान के लिए कानूनी संपर्क अधिकारी के रूप में भी काम किया।

अमेरिकी सपने को जीने वाला:

- गुजरात के आनंद में अपनी जड़ें तलाशने वाले पहली पीढ़ी के भारतीय, काश पटेल ने कहा कि वह "अमेरिकी सपने को जी रहे हैं"।
- उन्होंने शपथ लेने के बाद कहा कि "कोई भी जो सोचता है कि अमेरिकी सपना मर चुका है। बस यहीं देखें। आप पहली पीढ़ी के भारतीय बच्चे से बात कर रहे हैं जो अमेरिकी कानून प्रवर्तन समुदाय का नेतृत्व करने वाला है"।

FBI के कार्यप्रणाली के आलोचक:

- उम्मीद है कि काश पटेल FBI में आमूलचूल परिवर्तन करने के अपने घोषित इरादे को पूरा करेंगे। क्योंकि उन्हें FBI के कार्यप्रणाली का कट्टर आलोचक माना जाता है। "शॉन रयान शो" में पटेल ने कहा था की "FBI का प्रभाव बहुत बड़ा हो गया है"।
- उन्होंने अपनी पुस्तक 'गवर्नमेंट गैंगस्टर्स' में पटेल ने FBI मुख्यालय को वाशिंगटन से बाहर ले जाने और FBI के भीतर सामान्य परामर्शदाता के कार्यालय को कम करने को "डीप स्टेट को हराने के लिए शीर्ष सुधारों" में से एक बताया है।

कथित "डीप स्टेट" के कट्टर आलोचक:

- काश पटेल ने अपनी पुस्तक 'गवर्नमेंट गैंगस्टर्स' में, "डीप स्टेट" की कड़ी आलोचना की है। उल्लेखनीय है कि "डीप स्टेट" एक ऐसा शब्द जिसका इस्तेमाल वे निर्वाचित राजनेताओं, प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों, पत्रकारों और "अनिर्वाचित नौकरशाही के सदस्यों" के लिए करते हैं।
- उन्होंने "डीप स्टेट" को "अमेरिकी लोकतंत्र के लिए सबसे गंभीर खतरा" बताया। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प निस्संदेह इसे मत को स्वीकार करते हैं, और उन्होंने इस पुस्तक को "व्हाइट हाउस को वापस लेने का खाका" कहा है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- एक साक्षात्कार में, पटेल ने उन पत्रकारों की जांच करने और उनके पीछे आने का वादा किया जिन्होंने "झूठ बोला" और "जो बिडेन को राष्ट्रपति चुनावों में धांधली करने में मदद की।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

ग्लेशियरों के पिघलने से समुद्र का स्तर इस शताब्दी में लगभग 2 सेमी बढ़ जायेगा:

चर्चा में क्यों है?

- हाल ही में प्रकाशित *"2000 से 2023 तक वैश्विक ग्लेशियर द्रव्यमान परिवर्तनों का सामुदायिक अनुमान"* शीर्षक वाले अध्ययन में पाया गया है कि दुनिया भर में ग्लेशियरों से बर्फ पिघलने के कारण इस सदी में अकेले समुद्र का स्तर लगभग 2 सेमी तक बढ़ जाएगा। यह शोध पत्र 19 फरवरी को नेचर जर्नल में प्रकाशित हुआ था।
- उल्लेखनीय है कि समुद्र के स्तर में 2 सेमी की वृद्धि मामूली लग सकती है, लेकिन यह दुनिया के लिए विनाशकारी परिणाम हो सकती है। यूके के नॉर्थंब्रिया विश्वविद्यालय में भूगोल और पर्यावरण विज्ञान विभाग के प्रमुख एंड्रयू शेफर्ड ने बताया कि "समुद्र के स्तर में हर सेंटीमीटर की वृद्धि हमारे ग्रह पर कहीं न कहीं सालाना बाढ़ के लिए 20 लाख लोगों को जोखिम में डालती है"।

समुद्र का स्तर क्यों बढ़ रहा है?

- समुद्र का स्तर बढ़ना मूल रूप से महासागर की सतह की औसत ऊंचाई में वृद्धि है, जिसे पृथ्वी के केंद्र से मापा जाता है। समुद्र का स्तर वर्तमान में बढ़ने के दो मुख्य कारण हैं।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण ग्लेशियर और बर्फ क्षत्रपों का पिघलना:

- पहला कारण ग्लोबल वार्मिंग के कारण ग्लेशियर और बर्फ क्षत्रपों (ग्लेशियर जो 50,000 वर्ग किलोमीटर से अधिक भूमि को कवर करते हैं) पिघल रही हैं।
- इस अध्ययन के अनुसार, 2000 के बाद से, ग्लेशियरों ने क्षेत्रीय स्तर पर अपनी बर्फ का 2% से 39% और वैश्विक स्तर पर लगभग 5% खो दिया है। यह ग्रीनलैंड और अंटार्कटिक में दो मौजूदा बर्फ क्षत्रपों की तुलना में लगभग 18% अधिक है।

समुद्री जल का उष्मीय विस्तार:

- दूसरा कारण समुद्री जल का उष्मीय विस्तार है, एक प्रक्रिया जिसके द्वारा पानी गर्म होने पर फैलता है। वैश्विक तापमान बढ़ने के साथ, महासागर गर्म हो रहे हैं, और परिणामस्वरूप, पानी की मात्रा भी बढ़ रही है।
- नासा के अनुसार, समुद्री जल का तापीय विस्तार वैश्विक समुद्र स्तर में वृद्धि के एक-तिहाई से आधे के लिए जिम्मेदार है।

वैश्विक समुद्र स्तर में वृद्धि से जुड़े आंकड़े:

- अमेरिकी एजेंसी नेशनल ओशनिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन (NOAA) के अनुसार, 1880, जब पहली बार रिकॉर्ड रखे गए थे, से लेकर अब तक वैश्विक समुद्र स्तर में लगभग 21 सेमी की वृद्धि हुई है।

वैश्विक समुद्र स्तर में नाटकीय रूप से तेज वृद्धि:

- हाल के वर्षों में, वैश्विक समुद्र स्तर में यह वृद्धि नाटकीय रूप से तेज हो गई है। यह 1993 में 0.18 सेमी प्रति वर्ष से बढ़कर वर्तमान दर 0.42 सेमी प्रति वर्ष हो गई है।
- NASA के अनुसार वर्ष 1993 से 2024 के बीच वैश्विक समुद्र स्तर में 10 सेमी से अधिक की वृद्धि हुई है, जो वृद्धि की हालिया दर पिछले 2,500 से अधिक वर्षों में अभूतपूर्व है।

समुद्र का स्तर दुनिया भर में असमान रूप से बढ़ा है:

- उल्लेखनीय है कि समुद्र का स्तर दुनिया भर में समान रूप से नहीं बढ़ रहा है। उदाहरण के लिए, 2022 के WMO की रिपोर्ट के अनुसार, दक्षिण-पश्चिमी हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्र का स्तर 2.5 मिमी प्रति वर्ष की दर से बढ़ रहा है, जो वैश्विक औसत से अधिक है। यह असमान वृद्धि इसलिए है क्योंकि समुद्र-स्तर में

परिवर्तन के क्षेत्रीय पैटर्न महासागर की ऊष्मा सामग्री और लवणता में स्थानीय परिवर्तनों से प्रभावित होते हैं।

भारत के तटीय शहरों में भी समुद्र स्तर में वृद्धि:

- भारत के तटीय शहरों में भी हाल के वर्षों में समुद्र के स्तर में वृद्धि देखी गई है। उदाहरण के लिए, मुंबई में 1987 और 2021 के बीच 4.44 सेमी की वृद्धि देखी गई है, जो कि बेंगलुरु स्थित CSTEP की 2024 की रिपोर्ट के अनुसार भारतीय शहरों में सबसे खराब है। CSTEP रिपोर्ट में कहा गया है कि पश्चिम बंगाल के हल्दिया में 2.726 सेमी, आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम में 2.381 सेमी और केरल के कोच्चि में 2.213 सेमी समुद्र का स्तर बढ़ा है।

समुद्र के स्तर में वृद्धि से हमें चिंतित क्यों होना चाहिए?

- समुद्र के स्तर में वृद्धि मानव और प्राकृतिक प्रणालियों दोनों को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकती है।
- इससे तटीय बाढ़ अधिक बार और तीव्र हो जाती है, जो तटीय कटाव को बढ़ाती है, और अंततः तट के करीब रहने वाली आबादी को विस्थापित करती है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- उदाहरण के लिए, नेशनल सेंटर फॉर कोस्टल रिसर्च (NCCR) की 2018 की रिपोर्ट के अनुसार, 1990 और 2016 के बीच, अकेले पश्चिम बंगाल तट ने लगभग 99 वर्ग किलोमीटर भूमि खो दी। समुद्र के स्तर में वृद्धि इसका एक बड़ा कारण है।
- इस वृद्धि के परिणामस्वरूप अधिक तीव्र तूफानी लहरें भी आती हैं, जिससे उष्णकटिबंधीय तूफानों के दौरान अधिक पानी अंतर्देशीय हो जाता है।
- यह बदले में मैंग्रोव, प्रवाल भित्तियों और नमक दलदल जैसे तटीय पारिस्थितिकी तंत्रों को प्रभावित कर सकता है, ताजे पानी की आपूर्ति को दूषित कर सकता है, और इस प्रकार लोगों के दैनिक जीवन को प्रभावित कर सकता है।